

# BFC PUBLICATIONS PVT. LTD.

## Personal Details

Author Name	Sanjay Patil
Father Name	Manik Rao Patil
Date of Birth	1992-09-03
Contact No	9977884076
Alternate contact no.	
e-mail ID	thesanjaypatil9977@gmail.com
Nominee Name	Vijay Kumar Patil
Correspondence Address :	Dyneshwar Ramchandra Deshmukh Kirana Shop
Landmark	At Post Medha, near Sbi bank Medha
City	Satara
State	Maharashtra
Pin Code	415012
Country	India

## BANK DETAILS

Account holder's name	Sanjay Patil
Account No.	21130100014263
Bank Name	Bank Of Baroda

<b>Branch</b>	Fasana, Allahabad
<b>IFSC Code</b>	BARB0FASANA
<b>Pan No.</b>	JZDPS8210E

### Book Details

<b>Book Title</b>	Adhuri Chah
<b>How would you like your name to appear on book?</b>	Sanjay Patil
<b>Manuscript Language</b>	Hindi
<b>Book Genre</b>	Fiction
<b>Number of images (If any)</b>	0
<b>Manuscript Status</b>	Proof Read
<b>Book Size</b>	6"x9"

### Cover details

#### Synopsis

भावना प्राइवेट हॉस्पिटल में नर्स की जॉब करती है, वह अपनी कड़ी मेहनत से सफलता हासिल करती है। इस सफर के दौरान कठिनी परिस्थिति में राजेश भावना की हर संभव मदद करता है लेकिन सफलता मिलने के बाद वो राजेश का साथ छोड़ देती है। राजेश अपनी इंजीनियरिंग कॉलेज की पढ़ाई में हुई असफलता की वजह से अपने गाँव में खेती करने लगता है। ये उन दो पात्रों की कहानी है जो साथ में रहना तो चाहते थे मगर समय के बदलाव के साथ "अधूरी चाह" सा ही अलग-अलग रहकर जीवन व्यतीत करते हैं।

## Blurb

इस कहानी के मुख्य पात्र राजेश और भावना है। राजेश के पापा गाँव के सरकारी स्कूल में शिक्षक थे, उनका सपना था कि राजेश भविष्य में एक अच्छा इंजीनियर बने इसलिए शहर के इंजीनियरिंग कॉलेज में एडमिशन कराते हैं, लेकिन पढ़ाई में मन ना लगने की वजह से राजेश हर सेमेस्टर के सब्जेक्ट में नरितर असफल होता रहता है। फरि उसने थर्ड सेमेस्टर के बाद से कॉलेज जाना बंद कर दिया और पढ़ाई की जंग में भी अपने आप को हारा हुआ महसूस कर लिया था। भावना जब 6 महीने की थी तब पापा मम्मी में कुछ अनबन होने की वजह से गुस्से में मम्मी ने अपने आप पर कैरोसिनि तेल डालकर आग लगा ली थी, जिससे उनकी मौत हो गई थी। भावना की 6 महीने की उम्र से ही दादी ने अच्छे से पालन पोषण किया। गाँव में हाईस्कूल की पढ़ाई के दौरान गौरव से प्यार हो जाता है। कुछ साल के बाद भावना और गौरव के बीच हुए झगड़े में भावना का सरि दीवार से टकराने की वजह से बुरी तरह से जख्मी हो जाता है, इस घटना के बाद से दोनों के बीच दूरियां सी बढ़ने लग जाती है। इसी दौरान शहर में भावना की मुलाकात राजेश से होती है फरि धीरे-धीरे दोनों में प्यार होने लगता है। राजेश आर्थिक रूप से मदद करके भावना का नर्सिंग कॉलेज में एडमिशन कराता है साथ ही प्राइवेट हॉस्पिटल में जॉब भी दिलाता है। जॉब लगने के बाद भावना अपने दादा-दादी की आर्थिक रूप से मदद किया करती थी और ये भी कहती थी कि अब आप लोग आराम करो, घर का पूरा खर्चा मैं संभाल लूँगी। भावना अपनी 21 वर्ष की उम्र में ही इतनी समझदारी और सूझबूझ वाली बातें करने लगी थी। राजेश का ये सपना था कि भावना अपने जीवन में कामयाबी के शखिर तक पहुँच जाये। इस दौरान राजेश अपनी पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पाता था, वो हमेशा भावना के सपनों को पूरा करके जीवनभर साथ नभाने की बात मन में सोचा करता था, लेकिन समय के साथ भावना के स्वभाव में परिवर्तन आने लगता है और अपनी ज़िन्दगी में असफल हुए राजेश को छोड़कर गौरव के साथ दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने लगती है। पापा की मृत्यु के बाद से ही राजेश का परिवार बखिरने लगता है और घर की आर्थिक स्थिति भी कमजोर सी होने लगती है इसलिए अब अपने गाँव में कसिान बनकर खेती करने लग जाता है। राजेश के अंतर्मन में ये अफ़सोस हमेशा हुआ करता था कि पापा का वो सपना अधूरी चाह बनकर ही रह गया। कई वर्षों के बाद अचानक जब राजेश और भावना की मुलाकात होती है तो भावना को अपनी गलती का अहसास होता है, तब वह अपने मन में सोचती है कि काश हम दोनों की "अधूरी चाह" पूरी हो जाती तो आज हम अपने सपनों जैसी ही खूबसूरत ज़िन्दगी खुशनुमा पलों के साथ जीवनयापन कर पाते।

## Author Bio

मेरा जन्म 9 मार्च 1992 को गाँव बट्टिल बाजार, जिला बैतूल, मध्यप्रदेश में हुआ था। जब मैं 5 वर्ष का था तब मेरी मम्मी का स्वरगवास हो गया था। इस घटना का मानसिक रूप से मुझे पर बहुत प्रभाव पड़ा। मेरा बचपन, अन्य बच्चों की तरह खेलकूद, शरारत में नहीं बीत पाया, मुझे ज्यादातर एकांत में ही रहना अच्छा लगता था। इस एकांत में अक्सर अपनी सोचवचार में ही डूबा रहता था। मैंने 12 वर्ष की उम्र से ही अपनी सोच और भावनाओं को डायरी में लिखना प्रारम्भ किया। एक दिन की बात है, तवानगर के हॉस्टल में, जब मैं 7 वी कक्षा में पढ़ता था, तब मेरे शिक्षक भार्गव सर ने गलती से मेरी डायरी के कुछ पन्ने पढ़े, वो काफ़ी प्रभावित हुए तब से सर मुझे हमेशा लिखने के लिए प्रेरित करते रहते थे। तवानगर हॉस्टल में भार्गव सर और मालवीय मैडम ये वो दो शिक्षक हैं, जिनका मेरे जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है। भार्गव सर ने जहाँ लिखने के लिए प्रेरित किया, वहीं मालवीय मैडम ने मेडिटेशन करके अंतरमन को प्रबल और साइकोलॉजी की छोटी छोटी बातों को सिखाया। ये शिक्षाएं मुझे जीवन के हर कठिन दौर में भी शांत होकर झुझझुझ से निरणय लेने में मदद करती हैं। बचपन से ही रवीन्द्रनाथ टैगोर जी और प्रेमचंद जी मेरे लिए आदर्श रहे हैं और उनकी रचनाओं से काफ़ी ज्यादा प्रभावित भी हुआ था। मैंने बहुत सी रचनाएँ लिखी हैं जिनमें "संघर्ष", "जिन्दा लाश", "माँ की ममता", "तवानगर हॉस्टल", "कसान आंदोलन", "भाई", "अभिशपित जीवन", "जिम्मेदारी", "प्यार", "नसिंतान", "परिवार", "वोल्टास (टाटा ग्रुप)", "चंबल घाटी" और "भारतीय" जैसी कुछ रचनाएँ हैं। मेरी कहानी "सपने", "इंजीनियरिंग कॉलेज-1" और "अधूरी चाह" प्रकाशित हुई हैं, बाकि कहानियाँ भी जल्द ही प्रकाशित करने की कोशिश करूँगा।